123
717
P
M
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1545/1071

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 717

2V

2011

35/4-0
RECEIVED
10 DEC. 1930
DEPARTMENT
717

* वन्देमातरम् *

महात्मा गांधी की घोषणा

Mahatma Gandhi ki Ghoshna

अथवा athwa

सत्याग्रह की आवाज ।

Satyagrah ki Awaz

Govt. of U.P. in Hindi

संग्रहकर्ता—आर० एन० शर्म्मा ।

प्रकाशक—अग्रवाल बुकडिपो खारीबावली देहली

द्वितीय बार] सन ३० [मूल्य -)

871.431
Sa 23 M
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 717
Date 18.12.71
GOVT. OF INDIA

छप गया ! छप गया !! छप गया !!!

नया

बिलखती विधवा [नाटक]

आगरे में क्रान्ति

[जिसका पहिला एडीशन हाथों हाथ बिक गया।]

एक अग्रवाल सेठ का छोटी उमर में अपने बेटे की शादी करना। शादी के चन्द दिन बाद लड़के का देहान्त हो जाना। उसकी विधवा स्त्री पर सास नन्द का अत्याचार। उसका अत्याचार सहते २ घर से निकलने का विचार करना। वह विचार सुसर को मालूम होना। सुसर का विधवा को ज़हर देने का विचार। ईश्वरी कोप से सुसर का खुद जहर पी लेना। बाद में सौतेली सास का उसको घर से निकाल देना, विधवा का पुरोहित के पास जाना और पुनर्विवाह के लिये प्रार्थना करना। पुरोहित का विरोध। इस पर विधवा का अदालत में जाना और एक देश भक्त की मारफत नेशन पर दावा। सनातन धर्मियों का घोर विरोध। अदालत में दोनों तरफ की बहसें। शास्त्रोक्त प्रमाण, विधवा का रोमांचकारी बयान, जूरियों की राय, अदालत का जजमेंट पढ़ने लायक है।

यह नाटक २०००० की जनता में "आनन्द-नाटक" की तरफ से आगरे में खेला जा चुका है और **ग्वालियर महाराज** ने भी अपने नाटक घर में छपने से प्रथम खिलाया था। पूरे हालात पढ़ियेगा। पृष्ठ संख्या २५० है। अन्दर अदालत का चित्र और तीन अन्य चित्र हैं। टाइटिल पर तिरंगा चित्र। मूल्य १॥) डाक खर्च अलग। चार पुस्तक मनीआर्डर से दाम भेजने पर ६) रु० में मिलेंगी।

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—

अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली, देहली।

महात्मा गांधी की घोषणा

उर्फ़

सत्याग्रह की आवाज ।

असहयोगी बना मैं आज़माले जिसका जी चाहे ।
निशान अपने ज़ुल्मो का बनाले जिसका जी चाहे ॥
सिखाया मंत्र सत्याग्रह मुझे प्रहलाद गांधी ने ।
देश के वास्ते सूली चढ़ाले जिसका जी चाहे ॥
लिये फिरते हैं जो कि खुद ही अपना सर हथेली पर ।
उन्हें क्या खौफ हथकड़ियां पिन्हाले जिसका जी चाहे ॥
मैं अपने सत्यव्रत पालन से टलने का नहीं हरगिज़ ।
बदन पर बेत या कोड़े लगाले जिसका जी चाहे ॥
मुझे भी देखना यह है कहां तक ज़ुल्म की हद है ?।
बदन की धज्जियां मेरे उड़ाले जिसा जी चाहे ॥
हूं शैयाद बतन मैं मुह से हरगिज़ उफ़ न निकलेगी ।
लहू खंजर के वारों से बहाले जिसा जी चाहे ॥
जब इक इक की जगह सौ सौ हैं राज़ी जेल जाने को ।
हमें अन्याय से कैदी बनाले जिसका जी चाहे ॥
बहादुर हिन्द कैसा है कोई दिनमें प्रकट होगा ।
अभी तो कायरो बुज़दिल बनाले जिसका जी चाहे ॥

कर्म-युग

आगया है कर्म युग कुछ कर्म करना चाहिये ।
देश पर और जाति पर हंस २ के मरना सीखलो ॥
मारने का नाम मत लो पहले मरना सीखलो ।
मिस्र आयर्लैंड दब कर फिर उभरना सीखलो ॥
पार यदी होना तुम्हें परतन्त्र दुख सिन्धु से ।
तैर कर तब रक्त सागर से उतरना सीखलो ॥
फिर जलादोगे सकल सँसार को इक आन में ।

देश दुखकी की आग में पड़ पहले जलना सीखलो ॥
तीर्थयात्र के लिए दिन रात उत्साहित रहो।
कृष्ण जन्म स्थान में निर्भय विचरना सीखलो ॥
देखना है दृश्य भारतवर्ष का यदि स्वर्ग में।
देश का प्राणार्पण से दुःख हरना सीखलो ॥

खुद जेल में जाकर बतलाया,
स्वराज्य का मन्दिर जेल में है।
जुज जेल के रस्ते कौनसे हैं,
जब क़ौम का रहबर जेल में है ॥
सब मुल्क के आदिल और दिमाग,
और हिन्दोंतां के चश्माचिराग।
हर एक खिरदवर जेल में है,
यानी हर लीडर जेल में है ॥
हर रिश्वत ख्वार व चुगल खोर,
हर ज़ालिम ऐश उड़ाता है।
बदतर से बदतर मौज में है,
बहतर से बहतर जेल में है ॥
जिस दिल में था वैराग निहां,
थी हुब्बे वतन की आग जहां।
जो शख्श भी था बेलाग यहां,
उस शख्स का बिस्तर जेल में है ॥
जब पांव पड़ी जंजीर नहीं,
और दिल में अपने हकीर नहीं।
तो जलील में गम की असीर नहीं,
हर अफ़ज़ल व बदतर जेलमें है ॥
खुद काम हो तुम बदनाम हो तुम,
नाकाम हो तुम गुलाम हो तुम।

बाहर है गुलामों का मसकन,
आज़ादों का घर जेल में है ॥
है शेर बब्बर पन्जाब का भी,
ज़िन्दाने बला के पिंजड़े में।
पाबन्द हुवस बुजदिल बाहर,
आज़ाद और सफदर जेलमें है ॥
क्या उल्टे तरीके निकले हैं,
इन्सानों के एजाज़ के अब।
सब कंकड़ पत्थर सड़कों पर,
और लाल जवाहिर जेल में है ॥
ऐ वन्देमातरम् ऐ शैदा,
इक पुतला इस्तक़लाल का है।
अभी सदहा और आमादा हैं
गो चौथा एडीटर जेल में है ॥

गज़ल आज़ादी का पैगाम २

आबरू पर मुल्क की हम सब फिदा हो जायंगे।
कांग्रेस पर हर तरह से हम फिदा हो जायंगे ॥
हासिल आज़ादी करेंगे जिस तरह भी हो सके।
देख लेना दास के नक़्शे कदम हो जायंगे ॥
क्यों हमें कमज़ोर समझे हो निहत्था जान कर।
गर बिगड़ बैठे तो फिर हम इक बला हो जायंगे ॥
आग से मत खेलना हम हैं वो गोले आग के।
गर भड़क उठे तो पैगामे कज़ा हो जायंगे ॥
अन्दलीबाने चमन लो फिर बहार आने को है।
आगया है वक्त अब नाले रसां हो जायंगे ॥

माल की होगी जरूरत तो लुटा देंगे गौहर।
मुल्को मिल्लत के लिये हम सब गदा होजायंगे॥
इक नये अन्दाज से किश्ती चलेगी मुल्क की।
और जवाहर लाल नेहरू नाखुदा हो जायंगे॥
आने वाला वक्त है तो देख लेना दोस्तो।
आज जो आजिज़ हैं कल वह क्या से क्या होजायंगे॥

इन गांधी टोपी वालों ने ४

इक लहर चला दी भारत में, इन गांधी टोपी वालों ने।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया इन गांधी टोपी वालों ने॥
सदियों की गुलामी में फँस कर, अपने को से जो भूल चुके।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी टोपी वालों ने॥
सर्व स्वदेश हित कर दो तुम, अर्पण सपूत हो माता के।
सर्वस्व त्याग का मन्त्र दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
अनहित में भारत माता के, जो लगे देश द्रोही बन कर।
उन को सत-पथ पर चला दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
पट बन्द हुये कितने मिल के, लंकाशायर भी चीख़ उठा।
चरखे का चक्र चलाया जब, इन गांधी टोपी वालों ने॥
रोते हैं विदेशी व्यापारी, अपना सिर धुन बतलाते हैं।
खद्दर से प्रेम किया जब से, इन गांधी टोपी वालों ने॥
आदर्श जो हैं इस भारत के, दीनों के प्राण पियारे हैं।

नेता गांधी को बना लिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
"अब मेल करो आपस में तुम, जंजीर गुलामी की तोड़ो।
माना गांधी का कहना ये, इन गांधी टोपी वालों ने॥
है विकट समस्या तीस की भी, उसको भी हल कराना होगा।
जरिया बस एक निकाल लिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
युवकों के हृदय दुलारे हैं, आंखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहर को राजा, इन गांधी टोपी वालों ने॥
खुश हुआ 'दग्ध' यह सुन करके स्वाधीन बनेगा भारत अब।
विश्वास दिलाया ऐसा ही, इन गांधी टोपी वालों ने॥

भजन चरखा ८

चला दो चर्खा हर एक घर में, ये चर्खा तब तुम हिला सकोगे।
बंधा तभी सिलसिला सकोगे, उन्हें कबड्डी खिला सकोगे॥
हमारे चरखे में ऐसा फन है, जो आजकल की मशीनगन है।
वो मानचेस्टर वो लंकाशायर, का जीत इस से किला सकोगे॥
रुई न भारत की हो रवाना, बुने स्वदेशी का ताना बाना।
इसी तरह से विदेशी वणिज को, मार फांसी दिला सकोगे॥
न पट विदेशी का लो सहारा, शरीर चाहे रहे उघारा।
बचे बहत्तर करोड़ रुपया, तब आने बच्चे जिला सकोगे॥
मिला लो भाई गले लगा के स्वदेशी का तुम सबक पढ़ा के।
विदेशी चीजों को दो हटा के, फिर चैन बंशी बजा सकोगे॥

गजल

वतर्ज रोहतक व हरियाणा

महात्मा गांधी ने हिला दियो संसार । टेक
वह भोली भाली शक्ल वाला,
दुनिया में बड़ो अक़ल वाला ।
अन्याय में है वह दख़ल वाला.
जिस से कांपे सर कार ॥ म०
वह दुबला पतला इक नर है,
जिसको अति प्यारा खद्दर है ।
न जग में उसको कुछ डर है
रहता है बिन हथियार ॥ म०
इक चर्खा उसकी मशीन गन है
कुछ खद्दर धारी पलटन है ।
कोई मोटा कोई सूखे तन है
लै सत्या ग्रही तलवार ॥ म०
नहीं ताज साज वह वाला है
नहीं नखरे नाज़ वह वाला है ।
इक खाली लंगोटी वाला है
जिस पें बढ़ते हथियार ॥ म०
वह कहता मुल्क न ग़ारत हो
हां बेशक नेक तिजारते हो ।
और कहे स्वतन्त्र भारत हो
बस चहाता निज अधिकार ॥

———

ग़ज़ल

अगर आज़ाद गैरों से मेरा हिन्दोस्तां होगा,
तो हर एक नौं जवां खुश हाल सतयुग का समा होगा ॥
मगर अफ़सोस जकड़ा है गुलामी में मेरा भारत,
वह दिन अब जल्द आता है कि अपना राज यां होगा ॥
कहेंगे फिर नहीं जलाया में मारो भेड़ बकरी से,
न रौलट एक्ट ही होगा न हैरों का निशां होगा ॥
न होगा मार्शला भी अगर आज़ाद हम होंगे,
इसी भारत में फिर अर्जुन सा हर एक नौजवां होगा
बला से जान भी जाये मगर ईमान रह जाये,
हमें होगी खुशी जब ही हमारा खूँ वाँ होगा ॥
ये हिन्दी हिन्द के बासी नहीं तोपों से डरते हैं,
भला कब तक हमारी ये जमीं और आस्मां होगा ॥
महात्मा सत्य गाँधी ने चलाया चक्र चर्खे का,
इसी से ग़ैर के अन्याय का बल खातमाँ होगा ॥
फलेंगे फूलेंगे हमारे बाग़ के बूटे,
जवाहर लाल नेहरू सा हमारा बाग़वाँ होगा ॥

——

जेलखाने की भी खुश होके बढ़ायें रौनक।
एक क्या लाखों बना जायंगे मर ते मरते ॥
मातृ-भूमि के लिए जान निछावर कर दें।
सबक भारत को पढ़ा जायंगे मरते मरते ॥
हैं तो नाचीज मगर इतनी जुरत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायंगे मरते मरते ॥
दत्त, भगत, दयानन्द, तिलक, गांधी का।
सबको फरमान सुना जायंगे मरते मरते ॥

शहीदों के खूं का असर ९

शहीदों के खूं का असर देख लेना।
मिटायेंगे जालिमका घर देख लेना ॥
किसी के इशारे के हम मुन्तजिर हैं।
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना
झुकादेंगे गरदन को हम जेर खंजर।
खुशी से कटायेंगे सर देख लेना ॥
जो खुदगर्ज गोली चलाते हैं हमपर।
तो कदमोंमें उनकाही सर देख लेना ॥
जो नकश हमने खींचाहै खूनेजिगर से।
वह होगा कभी बारवर देख लेना ॥
किनारे पे आये भंवरसे वह किश्ती।
वह आयेगी एकदिन लहर देखलेना ॥
बलायें ये जायेंगी खुद सर निगूं हो।
नहीं होगी इनकी गुजर देख लेना ॥
खुजद ही हुआ हिन्द आजाद अपना।
छपेगी ये एक दिन खबर देख लेना ॥

फांसी के तख्ते पर देशभक्तों के मनोभाव १०

कहते हैं अलविदा अब हम इस जहान को।
जाकर खुदा के घर फिर आया न जायेगा॥
अहले वतन अगरचे हमें भूल जायेंगे।
अहले वतन को हमसे भुलाया न जायगा॥
जुल्मो सितम से तंग न आयेंगे हम कभी।
हम से सर नियाज़ झुकाया न जायगा॥
इससे ज्यादा और सितम क्या करेंगे वह।
इससे ज्यादा उन से सताया न जायगा॥
हम ज़िन्दगी से रूठ कर बैठे हैं जेल में।
अब जिन्दगी से हम को मनाया न जायगा॥
यह सच है मौत हमको मिटा देगी दुहेर से।
लेकिन हमारा नाम मिटाया न जायगा॥
हमने लगाई आग है जो इन्कलाब की।
इस आग को किसी से बुझाया न जायगा॥
यारो है अब भी वक्त हमें देख भाल लो।
फिर कुछ पता हमारा लगाया न जायेगा॥
आजाद हम कर न सके अपने मुल्क को।
खंजर यह मुँह खुदा को दिखाया न जायगा॥

शहीद गर्जना ११

(ले०— काकोरी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल)

भारत न रह सकेगा हरगिज़ गुलाम खाना
आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़माना॥

खूं खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द जुल्म ढाना॥
क़ौमी तिरंगे झण्डे पर जां निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुसलिम गाते हैं यह तराना॥
अब भेड़ बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परवाह अब किसे है जेलओ दमनकी प्यारो।
इक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है मंज़ूर सर कटाना॥

राष्ट्रपति जवाहरलाल नं० १२

भारत का डंका आलम में बजवाया वीर जवाहर ने।
स्वाधीन बनो, स्वाधीन बनो, समझाया वीर जवाहर ने॥१॥
यह लाल जो मोतीलाल का है लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को हट करके, जगवाया वीर जवाहर ने॥२॥
अंगरेजों की मृगतृष्णा में, लटके थे सब भारतवासी।
पर आज़ादी का मंतर, सिखलाया वीर जवाहर ने॥३॥
दे दे स्पीचें ज़िन्दादिल, कमजोरी दूर भगा दी सब।
रग-रग में खूं आजादी का, दौड़ाया वीर जवाहर ने॥४॥
घोंटी है राजनीत उसने, छानी है खाक विदेशों की।
समता स्वतन्त्रता का मारग, दिखलाया वीर जवाहर ने॥५॥
पूंजीपति जमींदार करते हैं, जुल्म मजूर किसानो पर।
बन साथी दीनों का धीरज, धरवाया वीर जवाहर ने॥६॥

हिंदू मुसलिम सिख जैन ईसाई पारसी भाई-भाई हैं।
सब ऊँच-नीच का विषमभेद, मिटवाया वीरजवाहरने ॥७॥
इक रोशन आग धधकत है, आज़ादी की उसके दिल में
जिसे युवकों का मुर्दा दिल, चमकाया वीर जवाहर ने ॥८॥
नवयुवक करोड़ों भारत के, भूले थे भोग विलासों में।
युवकोंकी शक्ति को इकदम, उकसाया वीर जवाहर ने ॥९॥
आदर्श-चरित से वह अपने, युवकों का सम्राट् बना।
आजादी का ऊँचा झगडा, लहराया वीर जवाहर ने ॥१०॥
बिजली है वाणी में जिसकी, जादू है आंखों में उसकी।
देखा जिसको एकपल भरसें, अपनाया वीर जवाहर ने॥११॥
गांधी जब आशिष दे बोले "खुद झुक के बनूंगा मैं तेरा।
तब सेहरा राष्ट्रपतिका सिर, बंधवाया वीर जवाहर ने॥१२॥
लश्कर "प्रकाश" यह भारतका, अचरज से डूबी है दुनिया।
कांग्रेस को करके मुट्ठी में, मुसकाया वीर जवाहर ने ॥१३॥

वीरप्रतिज्ञा नं० १३

कसली कमर अबतो कुछ कर के दिखायेंगे।
आजाद ही हो लेंगे या सर ही कटा देंगे॥
हटने के नहीं पीछे डर कर कभी जुल्मों से।
तुम हाथ उठाओगे हम पैर बढ़ा देंगे॥
बेशस्त्र नहीं हैं हम बल है हमें चरखे का।
चरखे से जमीन को हम यों चर्ख गुंजा देंगे॥
परवा नहीं कुछ दम की गम नहीं मातम की।
है जान हथेली पर एक दम में गवां देंगे॥

उफ तक भी जुबां से हरगिज न निकालेंगे।
तलवार उठाओ तुम हम सर को झुका देंगे॥
सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका।
चलवाओ गन मशीनें हम सीना अड़ा देंगे॥
दिलवाओ हमें फांसी ऐलान से कहते हैं।
खूँ से ही शहीदों के हम फ़ौज बना देंगे॥
मुसाफिर जो 'अंडमन' के तूने बनाये ज़ालिम।
आज़ाद ही होने पर हम उनको बुला लेंगे॥

सर फरोशी की तमन्ना १४

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है अब जोर कितना बाजुवे क़ातिल में है॥
रह बरे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज्जते ईसहरान वर्दी दूर यह मंजिल में है॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां।
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मकतल में कातिल कह रहा है बार २
क्या तमन्नायें शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गैरकी महफिल में है॥
अब न अगले बलबलेहैं और न अरमानोंकी भीड़।
सिर्फ मिटजानेकी हसरत अबदिले बिस्मिल में है॥

वीर गर्जना नं० १५

भारत के शेर जागो बदला है अब जमाना ।
प्यारे वतन को इस दम आजाद है बनाना ॥
मत बुजदिलीको हरगिज तुम पासदो फटकने ।
आखिर तो दम अदम को होगा कभी रवाना ॥
स्वतन्त्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक ।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना ॥
परदेशियों का इस दम जो साथ दे रहे हैं ।
उनको हराम है अब भारत का अन्न खाना ॥

यदि आप बेरोज़गार हैं

तो

निराश न हों

यदि आप बेरोजगार हैं और स्वतन्त्रता से जीवन व्यतीत करना चाहते हो तो आप हमारे यहां के १६ सफे के ट्रैक्ट क्यों न मँगा कर बेचते हो। १६ सफे के ट्रैक्ट १॥) सैकड़ा व १५) हज़ार थोक व्यापारियों को भेजे जाते हैं। बिना बिकी पुस्तकें वापिस कर लेते हैं व्यौपारियों की मांग व लाभ का विशेष ध्यान रक्खा जाता है। इस के अलावा बम्बई, मथुरा, हाथरस बनारस, लाहौर आदि का थोक माल बिक्री के लिये तैयार रहता है।

१. राष्ट्रीय झण्डा	-)	झांसी की रानी	-)
२. आज़ादी का बिगुल	-)	शारदा बिल	-)
३. क्रान्ति की लहर	-)	गांधी की तोप	-)
४. नमक का इतिहास	-)	लल्लू का चाचा	-)
५. सत्याग्रह की तोप	-)	नकली साधू	-)
६. शहीदों की याद	-)	बिलखती विधवा	-)
७. सुदर्शन चक्र	-)	विधवा दुख दर्शन	≡)
		कांग्रेस के महापुरुष	१॥)

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता:—

अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली

देहली।

नारायणदास गुप्त के प्रबन्ध से द दया श्रेणी प्रेस, देहली में छपी ;